चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	17-9-24	3	3-4

दैनिक भास्कर

हकृवि में कृषि मेला शुरू • काम्बोज ने जल संरक्षण पर जोर दिया

सरसों की आरएच 725, गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 किस्मों की मांग

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कृषि मेला रबी का विवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने शुभारंभ किया। मेले की थीम 'फसल अवशेष प्रबंधन' है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेष प्रबंधन में हरियाणा अग्रणीय प्रदेश बन गया है। वर्तमान में हमें फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाकर जीवांश की मात्रा बढ़ाने, फसल विविधिकरण अपनाने व जल संरक्षण जैसे विषयों पर ध्यान देने की जरूरत है। विवि अब तक 295 उन्नत किस्में विकसित कर चुका है। इनकी अन्य प्रदेशों में मांग बढ़ने का कारण उनकी अधिक पैदावार व गुणवत्ता है। जिसमें सरसों की आरएच 725 व आरएच 1975 तथा गेंहू की डब्ल्यूएच 1270 व 1402 तथा चारे वाली फसल जई की ओएस 403 व ओएस 607 जैसी नई किस्में शामिल हैं।

मेले में पहले दिन 22 हजार 500 से अधिक किसान पहुंचे। उन्होंने नए उन्नत बीजों, कृषि विधियों, सिंचाई यंत्रों, कृषि मशीनरी की जानकारी हासिल की। आगामी रबी फसलों के बीजों के लिए किसानों में उत्साह देखा। जहां किसानों ने गेहूं, जौ, सरसों, चना, मेथी, मसूर, बरसीम, जई, मक्का की उन्नत किस्मों के लगभग 1 करोड़ 14 लाख 90 हजार 60 रुपए के बीज खरीदे। मेले में 30 हजार के कृषि साहित्य की बिक्री हुई। सब्जी व बागवानी फसलों के बीजों की 1 लाख 42 हजार 300 रुपए की बिक्री हुई। मिट्टी के 71 व पानी के 170 नमूनों की जांच हुई।

ट्रैक्टर को देखते मेले में पहुंचे किसान।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	17.9.24	10	5-8

हकृवि में दो दिवसीय कृषि मेले का शुभारंभ

फसल विविधिकरण तथा जल संरक्षण पर ध्यान देने की जरूरतः काम्बोज

हिसार, 16 सितंबर (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कृषि मेला (रबी) का विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने शुभारंभ किया। इस वर्ष कृषि मेले का थीम 'फसल अवशेष प्रबंधन रखा गया है। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों एवं निजी क्षेत्र की कंपनियों द्वारा नई तकनीकों की जानकारी देने के लिए 262 स्टालें लगाई गई हैं। मेले में किसानों को रबी फसलों की उन्नत किस्मों का प्रमाणित बीज उपलब्ध करवाने के लिए समुचित प्रबंध किए गए हैं। मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने कहा कि फसल विविधिकरण तथा जल संरक्षण पर ध्यान देने की जरूरत है। हरियाणा के गठन के समय खाद्यान्न उत्पादन 25.92 लाख टन था जो वर्ष 2021-22 में बढ़कर 230 लाख टन हो गया है।

उन्होंने कहा कि इन चुनौतियों से निपटने के लिए इस वर्ष के मेले का थीम 'फसल अवशेष प्रबंधन इसीलिए रखा गया है ताकि किसानों को इसके प्रति जागरूक किया जा सके। फसल अवशेष प्रबंधन पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों से विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाए जा सकते हैं। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों का दोहन जरूरत से ज्यादा ना करने की सलाह दी ताकि आने वाली पीढ़ियों को समस्या ना हो। मशीनों के उपयोग से खेती में मानव श्रम कम करके लागत घटाने पर भी ध्यान देने की जरूरत है। मेले में सोमवार को 22 हजार 500 से अधिक किसानों की उपस्थिति दर्ज की गई। उन्होंने नए उन्नत बीजों, कृषि विधियों, सिंचाई यंत्रों, कृषि मशीनरी आदि की जानकारी हासिल की।

हिसार स्थित कृषि विश्वविद्यालय में मुख्यअतिथि का स्वागत करते अधिकारी। -हप्र

	चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	17-9-24	4	2-8

फसल अवशेष प्रबंधन व जल संरक्षण पर दें ध्यान : कुलपति

चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में लगे कृषि मेले में हरियाणा, राजस्थान और पंजाब से आए किसान, इस वार महिलाएं भी पहुंचीं

जागरण संवाददाता • हिसार

[illegible]

कृषि मेले में आई आधुनिक मशीन को देखते किसान। • जागरण

22 हजार से ज्यादा किसान मेले में पहुंचे, बीज की रही डिमांड और साथ ही फलदार पौधे खरीदे

पौधा पाने की खुशी : चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि मेले में आया किसान। [illegible] • जागरण

नई किस्मों के प्रदर्शन प्लाट के बारे में दी जानकारी

[illegible]

बीज के लिए लगी किसानों की लंबी कतार

जागरण संवाददाता • हिसार

[illegible]

कृषि मेले में आए किसान लाइन में लगकर बीज लेते हुए • जागरण

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूँ	17-9-24	6	5-8

हकृवि में 'फसल अवशेष प्रबंधन' पर दो दिवसीय कृषि मेले का शुभारंभ

'फसल अवशेष प्रबंधन में हरियाणा अग्रणी प्रदेश'

कृषि मेले के दौरान मुख्यातिथि को सम्मानित करते अधिकारिगण।

हिसार(सच कहूँ न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में सोमवार को दो दिवसीय कृषि मेला (रबी) का विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने शुभारंभ किया। इस वर्ष कृषि मेले का थीम 'फसल अवशेष प्रबंधन' रखा गया है। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों एवं निजी क्षेत्र की कंपनियों द्वारा नई तकनीकों की जानकारी देने के लिए 262 स्टालें लगाई गई हैं। मेले में किसानों को रबी फसलों की उन्नत किस्मों का प्रमाणित बीज उपलब्ध करवाने के लिए समुचित प्रबंध किए गए हैं। मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने कहा कि हरियाणा के गठन के समय खाद्यान्न उत्पादन 25.92 लाख टन था, जो वर्ष 2021-22 में बढ़कर 230 लाख टन हो गया है। आज हरियाणा की गेहूं की औसत पैदावार 49.25 क्विंटल प्रति हैक्टेयर एवं सरसों की औसत पैदावार 20.58 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। हरियाणा बासमती चावल के लिए भी विशेष रूप से विख्यात है तथा देश के 60 प्रतिशत से अधिक बासमती चावल का निर्यात केवल हरियाणा से ही होता है और देश के कुल खाद्यान्न में 17 प्रतिशत का योगदान कर रहा है। फसल उत्पादन में इतनी महत्वपूर्ण उपलब्धियों के साथ-साथ कुछ चुनौतियां भी सामने आई है जैसे मृदा की उर्वरा शक्ति का कम होना, फसल अवशेषों का सदुपयोग ना होना आदि। जमीन की उर्वरा शक्ति घटने के साथ-साथ भूमि के लाभदायक जीवाणु भी अवशेषों को जलाने से नष्ट हो जाते हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए इस वर्ष के मेले का थीम फसल अवशेष प्रबंधन इसीलिए रखा गया है ताकि किसानों को इसके प्रति जागरूक किया जा सके।

प्राकृतिक संसाधनों का न करें दोहन

फसल अवशेष प्रबंधन पर प्रकाश डालते हुए प्रो. काम्बोज ने कहा कि फसल अवशेषों से विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाए जा सकते हैं। कुलपति ने कहा कि किसानों को जागरूक करने के कारण फसल अवशेष प्रबंधन में हरियाणा एक अग्रणीय प्रदेश बन गया है। वर्तमान समय में हमें फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाकर जीवांश की मात्रा बढ़ाने, फसल विविधिकरण अपनाने के साथ-साथ जल संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों का दोहन जरूरत से ज्यादा ना करने की सलाह दी ताकि आने वाली पीढ़ियों को समस्या ना हो।

डॉ. भुपेन्द्र ने किया मंच का संचालन

विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने मेले में सभी का स्वागत करते हुए मेले में दी जाने वाली सुविधाएं जैसे मिट्टी पानी की जांच, बीज व पौध तथा कृषि साहित्य की उपलब्धता के साथ नई किस्मों के प्रदर्शन प्लाट के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। मंच का संचालन डॉ. भुपेन्द्र ने किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	17-9-24	11	1-8

पहले दिन 22 हजार 500 किसानों ने की शिरकत, 1 करोड़ 14 लाख 90 हजार 60 रुपये के बीज खरीदे

हकृवि में 'फसल अवशेष प्रबंधन' पर दो दिवसीय कृषि मेले का शुभारंभ, दिखा उत्साह

- फसल अवशेष प्रबंधन के साथ फसल विविधिकरण तथा जल संरक्षण पर ध्यान देने की जरूरत : प्रो. काम्बोज
- जागरूकता के कारण फसल अवशेष प्रबंधन में हरियाणा एक अग्रणीय प्रदेश बना

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कृषि मेला (रबी) का विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने शुभारंभ किया। इस वर्ष कृषि मेले का थीम 'फसल अवशेष प्रबंधन' रखा गया है। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों एवं निजी क्षेत्र की कंपनियों द्वारा नई तकनीकों की जानकारी देने के लिए 262 स्टालें लगाई गई हैं। मेले में किसानों को रबी फसलों की उन्नत किस्मों का प्रमाणित बीज उपलब्ध करवाने के लिए समुचित प्रबंध किए गए हैं।

हिसार। कृषि मेले को संबोधित करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

बड़ी संख्या में पहुंचे किसान

मेले में आज 22 हजार 500 से अधिक किसानों की उपस्थिति दर्ज की गई। उन्होंने यहां उन्नत बीजों, कृषि विधियों, सिंचाई यंत्रों, कृषि मशीनरी आदि की जानकारी हासिल की। मेले में आगामी रबी फसलों के बीजों के लिए किसानों में भारी उत्साह देखा गया जहां किसानों ने गेहूं, जौ, सरसों, चना, मेथी, मसूर, बरसीम, जई तथा मक्का की उन्नत किस्मों के लगभग 1 करोड़ 14 लाख 90 हजार 60 रुपये के बीज खरीदे। मेले में 30 हजार रुपये के कृषि साहित्य की बिक्री हुई। सब्जी व बागवानी फसलों के बीजों की 1 लाख 42 हजार 300 रुपये की बिक्री हुई। किसानों ने मेले में मिट्टी व पानी जांच सेवा का लाभ उठाते हुए मिट्टी के 71 तथा पानी के 170 नमूनों की जांच करवाई। किसानों ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म पर वैज्ञानिकों द्वारा उगाई गई फसलों की किस्मों तथा उनमें प्रयोग की गई प्रौद्योगिकी के साथ-साथ जैविक खेती बारे जानकारी हासिल की।

मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि हरियाणा के गठन के समय खाद्यान्न उत्पादन 25.92 लाख टन था जो वर्ष 2021-22 में बढ़कर 230 लाख टन हो गया है। आज हरियाणा की गेहूं की औसत पैदावार 49.25 क्विंटल प्रति हैक्टेयर एवं सरसों की औसत पैदावार 20.58 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है।

हरियाणा बासमती चावल के लिए भी विशेष रूप से विख्यात है तथा देश के 60 प्रतिशत से अधिक बासमती चावल का निर्यात केवल हरियाणा से ही होता है और देश के कुल खाद्यान्न में 17 प्रतिशत का योगदान कर रहा है। फसल उत्पादन में इतनी महत्वपूर्ण उपलब्धियों के साथ-साथ कुछ चुनौतियां भी सामने आई हैं जैसे मृदा की उर्वरा शक्ति का कम होना, फसल अवशेषों का सदुपयोग ना होना आदि। जमीन की उर्वरा शक्ति घटने के साथ-साथ भूमि के लाभदायक जीवाणु भी अवशेषों को जलाने से नष्ट हो जाते हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए इस वर्ष के मेले का थीम 'फसल अवशेष प्रबंधन' इसीलिए रखा गया है ताकि किसानों को इसके प्रति जागरूक किया जा सके। फसल अवशेष प्रबंधन पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों से विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाए जा सकते हैं। कुलपति ने कहा कि किसानों की जागरूकता के कारण फसल अवशेष प्रबंधन में हरियाणा एक अग्रणीय प्रदेश बन गया है। वर्तमान समय में हमें फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाकर जीवांश की मात्रा बढ़ाने, फसल विविधीकरण अपनाने के साथ-साथ जल संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों का दोहन जरूरत से ज्यादा न करने की सलाह दी ताकि आने वाली पीढ़ियों को समस्या ना हो। मशीनों के उपयोग से खेती में मानव श्रम कम करके लागत घटाने पर भी ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय अब तक 295 उन्नत किस्में विकसित कर चुका है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	17-9-24	3	2-5

अवशेष प्रबंधन व जल संरक्षण पर दें ध्यान

वीसी प्रो. कंबोज़ ने किया संबोधित, एचएयू में लगे कृषि मेले में पहले दिन 22,500 किसानों ने की शिरकत

माई सिटी रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित कृषि मेले में किसानो की भीड़। संवाद

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित कृषि मेले में पहले दिन सोमवार को 22,500 से अधिक किसान पहुंचे। इस दौरान किसानों ने गेहूं, जौ, सरसों, चना, मेथी, मसूर, बरसीम, जई व मक्का की उन्नत किस्मों के लगभग 1 करोड़ 14 लाख 90 हजार 60 रुपये के बीज खरीदे।

सब्जी व बागवानी फसलों के बीजों की 1 लाख 42 हजार 300 रुपये की बिक्री हुई। इसके अलावा 30 हजार रुपये के कृषि साहित्य की बिक्री हुई। किसानों ने मिट्टी के 71 तथा पानी के 170 नमूनों की जांच करवाई।

इससे पहले दो दिवसीय कृषि मेला (रबी) शुभारंभ करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि वर्तमान समय में हमें फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाकर जीवांश की मात्रा बढ़ाने, फसल विविधिकरण अपनाने के साथ-साथ जल संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान देने की जरूरत है।

प्रदेश के गठन के समय खाद्यान्न उत्पादन 25.92 लाख टन था जो वर्ष 2021-22 में बढ़कर 230 लाख टन हो गया है। आज यहां गेहूं की औसत पैदावार 49.25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

वहीं देश के 60 प्रतिशत से अधिक बासमती चावल का निर्यात केवल हरियाणा से ही होता है और देश के कुल खाद्यान्न में 17 प्रतिशत का योगदान कर रहा है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय अब तक 295 उन्नत किस्में विकसित कर चुका है।

हमने तो कर ली बिजाई की तैयारी

एचएयू ओर से कृषि मेले में बीज की खरीदारी करके ले जाता किसान। संवाद

तोरी की बेल पर लगेगा टिंडा : अब तोरी की बेल से टिंडे की फसल ले सकेंगे। यह ग्राफ्टिंग तकनीक की मदद से संभव हो सकेगा। कृषि मेले में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने इस तकनीक का प्रदर्शन किया। डॉ. विकास ने बताया कि अभी इस तकनीक को लेकर ट्रायल चल रहा है। फिलहाल उन्होंने तरबूज, लौकी, टिंडा, खरबूजा के अलावा टमाटर, बैंगन, मिर्च व शिमला मिर्च आदि पर इस तकनीक का इस्तेमाल किया है।

गेहूं की किस्म 1270 को लेकर रही मारामारी

वहीं मेले में बीज लेने पहुंचे किसानों के बीच गेहूं की किस्म को लेकर काफी मारामारी रही। काफी डिमांड होने के बाद यह बीज जल्द खत्म हो गया। महेंद्रगढ़ से पहुंचे किसान विनीत ने बताया कि वह गेहूं की 1270 व 327 किस्म के बीज लेने आया था, लेकिन नहीं मिले। सिरसा के नाथूसरी चौपटा से आए किसान रवि जाखड़ ने बताया कि उसे गेहूं की 1270 व 303 किस्म के बीज लेने थे, लेकिन उपलब्ध नहीं हुए। झज्जर से आए किसान रविंद्र, कृष्ण ने बताया कि गेहूं की किस्म 187 के बीज लेने थे। मगर यहां नहीं मिले। इतनी दूर से आए थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	17-9-24	5	1-4

फसल अवशेष प्रबंधन के साथ फसल विविधिकरण व जल संरक्षण पर ध्यान देने की ज़रूरत : प्रो. काम्बोज

मुख्यातिथि को सम्मानित करते हुए अधिकारी।

हिसार, 16 सितम्बर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कृषि मेला (रबी) का विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने शुभारंभ किया। इस वर्ष कृषि मेले का थीम 'फसल अवशेष प्रबंधन' रखा गया है। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों एवं निजी क्षेत्र की कंपनियों द्वारा नई तकनीकों की जानकारी देने के लिए 262 स्टालें लगाई गई हैं। मेले में किसानों को रबी फसलों की उन्नत किस्मों का प्रमाणित बीज उपलब्ध करवाने के लिए समुचित प्रबंध किए गए हैं।

मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि हरियाणा के गठन के समय खाद्यान्न उत्पादन 25.92 लाख टन था जो वर्ष 2021-22 में बढ़कर 230 लाख टन हो गया है। कुलपति ने कहा कि किसानों को जागरूक करने के कारण फसल अवशेष प्रबंधन में हरियाणा एक अग्रणीय प्रदेश बन गया है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय अब तक 295 उन्नत किस्में विकसित कर चुका है तथा इन किस्मों की अन्य प्रदेशों में मांग बढने का कारण उनकी अधिक पैदावार व गुणवत्ता है जिसमें सरसों की आरएच 725 व आरएच 1975 तथा गेंहू की डब्ल्यूएच 1270 व 1402 तथा चारे वाली फसल जई की ओएस 403 व ओएस 607 जैसी नई किस्में शामिल हैं। विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने मेले में सभी का स्वागत करते हुए मेले में दी जाने वाली सुविधाएं जैसे मिट्टी पानी की जांच, बीज व पौध तथा कृषि साहित्य की उपलब्धता के साथ नई किस्मों के प्रदर्शन प्लाट के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। मंच का संचालन डॉ. भुपेन्द्र ने किया। उधर मेले में आज 22 हजार 500 से अधिक किसानों की उपस्थिति दर्ज की गई। उन्होंने नए उन्नत बीजों, कृषि विधियों, सिंचाई यंत्रों, कृषि मशीनरी आदि की जानकारी हासिल की।

मेले में आगामी रबी फसलों के बीजों के लिए किसानों में भारी उत्साह देखा गया जहां किसानों ने गेहूं, जौ, सरसों, चना, मेथी, मसूर, बरसीम, जई, तथा मक्का की उन्नत किस्मों के लगभग -1 करोड़ 14 लाख 90 हजार 60 रूपए के बीज खरीदे। मेले में 30 हजार रूपए के कृषि साहित्य की बिक्री हुई। सब्जी व बागवानी फसलों के बीजों की 1 लाख 42 हजार 300 रूपए की बिक्री हुई। किसानों ने मेले में मिट्टी व पानी जांच सेवा का लाभ उठाते हुए मिट्टी के 71 तथा पानी के 170 नमूनों की जांच करवाई। किसानों ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म पर वैज्ञानिकों द्वारा उगाई गई फसलें भी देखीं तथा उनमें प्रयोग की गई प्रौद्योगिकी के साथ-साथ जैविक खेती बारे जानकारी हासिल की।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	17.9.24	2	7.8

कृषि मेला : 15 फीट की ज्वार आकर्षण का केंद्र

हिसार| एचएयू में दो दिवसीय कृषि मेला रबी का कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने शुभारंभ किया। हकृवि मेले में 15 फुट की ज्वार लेकर जाता किसान।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	17.9.24	3	1-3

फसल अवशेष प्रबंधन के साथ फसल विविधिकरण तथा जल संरक्षण पर ध्यान देने की जरूरत: प्रो. काम्बोज

हकृवि में 'फसल अवशेष प्रबंधन' पर 2 दिवसीय कृषि मेले का शुभारंभ

हिसार, 16 सितम्बर (राठी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कृषि मेला (रबी) का विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने शुभारंभ किया। इस वर्ष कृषि मेले का थीम 'फसल अवशेष प्रबंधन' रखा गया है। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों एवं निजी क्षेत्र की कंपनियों द्वारा नई तकनीकों की जानकारी देने के लिए 262 स्टालें लगाई गई हैं। मेले में किसानों को रबी फसलों की उन्नत किस्मों का प्रमाणित बीज उपलब्ध करवाने के लिए समुचित प्रबंध किए गए हैं।

मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि हरियाणा के गठन के समय खाद्यान्न उत्पादन 25.92 लाख टन था जो वर्ष 2021-22 में बढ़कर 230 लाख टन हो गया है। आज हरियाणा की गेहूं की औसत पैदावार 49.25 क्विंटल प्रति हैक्टेयर एवं सरसों की औसत पैदावार 20.58 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। हरियाणा बासमती चावल के लिए भी विशेष रूप से विख्यात है तथा देश के 60 प्रतिशत से अधिक बासमती चावल का निर्यात केवल हरियाणा से ही होता है और देश के कुल खाद्यान्न में 17 प्रतिशत का योगदान कर रहा है।

फसल उत्पादन में इतनी महत्वपूर्ण उपलब्धियों के साथ-साथ कुछ चुनौतियां भी सामने आई है जैसे मृदा की उर्वरा शक्ति का कम होना, फसल अवशेषों का सदुपयोग ना होना आदि। ज़मीन की उर्वरा शक्ति घटने के साथ-साथ भूमि के लाभदायक जीवाणु भी अवशेषों को जलाने से नष्ट हो जाते हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए इस वर्ष के मेले का थीम 'फसल अवशेष प्रबंधन' इसीलिए रखा गया है ताकि किसानों को इसके प्रति जागरूक किया जा सके।

मुख्यातिथि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कृषि मेले को संबोधित करते हुए व: मेले का अवलोकन करते हुए।

फसल अवशेष प्रबंधन पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों से विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाए जा सकते हैं। कुलपति ने कहा कि किसानों को जागरूक करने के कारण फसल अवशेष प्रबंधन में हरियाणा एक अग्रणीय प्रदेश बन गया है। वर्तमान समय में हमें फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाकर जीवांश की मात्रा बढ़ाने, फसल विविधिकरण अपनाने के साथ-साथ जल संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय अब तक 295 उन्नत किस्में विकसित कर चुका है तथा इन किस्मों की अन्य प्रदेशों में मांग बढ़ने का कारण उनकी अधिक पैदावार व गुणवत्ता है जिसमें सरसों की आरएच 725 व आरएच 1975 तथा गेंहू की डब्ल्यूएच 1270 व 1402 तथा चारे वाली फसल जई की ओएस 403 व ओएस 607 जैसी नई किस्में शामिल हैं।

विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने मेले में सभी का स्वागत करते हुए मेले में दी जाने वाली सुविधाएं जैसे मिट्टी पानी की जांच, बीज व पौध तथा कृषि साहित्य की उपलब्धता के साथ नई किस्मों के प्रदर्शन प्लाट के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। मंच का संचालन डॉ. भूपेन्द्र ने किया।

पहले दिन 22 हजार से ज्यादा किसानों ने की शिरकत

मेले में आज 22 हजार से अधिक किसानों की उपस्थिति दर्ज की गई। उन्होंने नए उन्नत बीजों, कृषि विधियों, सिंचाई यंत्रों, कृषि मशीनरी आदि की जानकारी हासिल की। मेले में आगामी रबी फसलों के बीजों के लिए किसानों में भारी उत्साह देखा गया जहां किसानों ने गेहूं, जौ, सरसों, चना, मेथी, मसूर, बरसीम, जई, तथा मक्का की उन्नत किस्मों के लगभग -1 करोड़ 14 लाख 90 हजार 60 रुपए के बीज खरीदे। मेले में 30 हजार रुपए के कृषि साहित्य की बिक्री हुई। सब्जी व बागवानी फसलों के बीजों की 1 लाख 42 हजार 300 रुपए की बिक्री हुई। किसानों ने मेले में मिट्टी व पानी जांच सेवा का लाभ उठाते हुए मिट्टी के 71 तथा पानी के 170 नमूनों की जांच करवाई। किसानों ने विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म पर वैज्ञानिकों द्वारा उगाई गई फसलें भी देखीं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिन्दुस्थान समाचार	16.09.2024	---	--

फसल अवशेष प्रबंधन के साथ जल संरक्षण पर ध्यान देने की जरूरत :बीआर कम्बोज

जागरूकता के कारण फसल अवशेष प्रबंधन में हरियाणा एक अग्रणीय प्रदेश बना

हकृवि में फसल अवशेष प्रबंधन पर दो दिवसीय कृषि मेले का शुभारंभ

हिसार, 16 सितंबर (हि.स.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कृषि मेला (रबी) का विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने शुभारंभ किया। इस वर्ष कृषि मेले का थीम फसल अवशेष प्रबंधन रखा गया है। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों एवं निजी क्षेत्र की कंपनियों द्वारा नई तकनीकों की जानकारी देने के लिए 262 स्टालें लगाई गई हैं। मेले में किसानों को रबी फसलों की उन्नत किस्मों का प्रमाणित बीज उपलब्ध करवाने के लिए समुचित प्रबंध किए गए हैं।

मुख्यातिथि प्रो. कम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि हरियाणा के गठन के समय खाद्यान्न उत्पादन 25.92 लाख टन था जो वर्ष 2021-22 में बढ़कर 230 लाख टन हो गया है। आज हरियाणा की गेहूं की औसत पैदावार 49.25 क्विंटल प्रति हैक्टेयर एवं सरसों की औसत पैदावार 20.58 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। हरियाणा बासमती चावल के लिए भी विशेष रूप से विख्यात है तथा देश के 60 प्रतिशत से अधिक बासमती चावल का निर्यात केवल हरियाणा से ही होता है और देश के कुल खाद्यान्न में 17 प्रतिशत का योगदान कर रहा है। फसल उत्पादन में इतनी महत्वपूर्ण उपलब्धियों के साथ-साथ कुछ चुनौतियां भी सामने आई है जैसे मृदा की उर्वरा शक्ति का कम होना, फसल अवशेषों का सदुपयोग ना होना आदि।

कुलपति ने कहा कि किसानों को जागरूक करने के कारण फसल अवशेष प्रबंधन में हरियाणा एक अग्रणीय प्रदेश बन गया है। वर्तमान समय में हमें फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाकर जीवांश की मात्रा बढ़ाने, फसल विविधिकरण अपनाने के साथ-साथ जल संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों का दोहन जरूरत से ज्यादा ना करने की सलाह दी ताकि आने वाली पीढ़ियों को समस्या ना हो। मशीनों के उपयोग से खेती में मानव श्रम कम करके लागत घटाने पर भी ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय अब तक 295 उन्नत किस्में विकसित कर चुका है तथा इन किस्मों की अन्य प्रदेशों में मांग बढ़ने का कारण उनकी अधिक पैदावार व गुणवत्ता है जिसमें सरसों की आरएच 725 व आरएच 1975 तथा गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 व 1402 तथा चारे वाली फसल जई की ओएस 403 व ओएस 607 जैसी नई किस्में शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	17.09.2024	---	--

फसल अवशेष प्रबंधन के साथ फसल विविधिकरण तथा जल संरक्षण पर ध्यान देने की जरूरत: प्रो. बी.आर. काम्बोज

हकृवि में 'फसल अवशेष प्रबंधन' पर दो दिवसीय कृषि मेले का शुभारंभ

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कृषि मेला (रबी) का विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने शुभारंभ किया। इस वर्ष कृषि मेले का थीम 'फसल अवशेष प्रबंधन' रखा गया है। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों एवं निजी क्षेत्र की कंपनियों द्वारा नई तकनीकों की जानकारी देने के लिए 262 स्टालें लगाई गई हैं। मेले में किसानों को रबी फसलों की उन्नत किस्मों का प्रमाणित बीज उपलब्ध करवाने के लिए समुचित प्रबंध किए गए हैं।

मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि हरियाणा के गठन के समय खाद्यान्न उत्पादन 25.92 लाख टन था जो वर्ष 2021-22 में बढ़कर 230 लाख टन हो गया है। आज हरियाणा की गेहूं की औसत पैदावार 49.25 क्विंटल प्रति हैक्टेयर एवं सरसों की औसत पैदावार 20.58 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। हरियाणा बासमती चावल के लिए भी विशेष रूप से विख्यात है तथा देश के 60 प्रतिशत से अधिक बासमती चावल का निर्यात केवल हरियाणा से ही होता है और देश के कुल खाद्यान्न में 17 प्रतिशत का योगदान कर रहा है। फसल उत्पादन में इतनी महत्वपूर्ण उपलब्धियों के साथ-साथ कुछ चुनौतियां भी सामने आई है जैसे मृदा की उर्वरा शक्ति का कम होना, फसल अवशेषों का सदुपयोग ना होना आदि। जमीन की उर्वरा शक्ति घटने के साथ-साथ भूमि के लाभदायक जीवाणु भी अवशेषों को जलाने से नष्ट हो जाते हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए इस वर्ष के मेले का थीम 'फसल अवशेष प्रबंधन' इसीलिए रखा गया है ताकि किसानों को इसके प्रति जागरूक किया जा सके। फसल अवशेष प्रबंधन पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों से विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाए जा सकते हैं।

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	16.09.2024	---	--

फसल अवशेष प्रबंधन के साथ फसल विविधिकरण तथा जल संरक्षण पर ध्यान देने की जरूरत : प्रो. बी.आर. काम्बोज

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार । चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कृषि मेला (रबी) का विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने शुभारंभ किया। इस वर्ष कृषि मेले का थीम 'फसल अवशेष प्रबंधन' रखा गया है। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों एवं निजी क्षेत्र की कंपनियों द्वारा नई तकनीकों की जानकारी देने के लिए 262 स्टालें लगाई गई हैं। मेले में किसानों को रबी फसलों की उन्नत किस्मों का प्रमाणित बीज उपलब्ध करवाने के लिए समुचित प्रबंध किए गए हैं। मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि हरियाणा के गठन के समय खाद्यान्न उत्पादन 25.92 लाख टन था जो वर्ष 2021-22 में बढ ?र 230 लाख टन हो गया है। आज हरियाणा की गेहूं की औसत पैदावार 49.25 क्विंटल प्रति हैक्टेयर एवं सरसों की औसत पैदावार 20.58 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। हरियाणा बासमती चावल के लिए भी विशेष रूप से विख्यात है तथा देश के 60 प्रतिशत से अधिक बासमती चावल का निर्यात केवल हरियाणा से ही होता है और देश के कुल खाद्यान्न में 17 प्रतिशत का योगदान कर रहा है। फसल उत्पादन में इतनी महत्वपूर्ण उपलब्धियों के साथ-साथ कुछ चुनौतियां भी सामने आई है जैसे मृदा की उर्वरा शक्ति का कम होना, फसल अवशेषों का सदुपयोग ना होना आदि। जमीन की उर्वरा शक्ति घटने के साथ-साथ भूमि के लाभदायक जीवाणु भी अवशेषों को जलाने से नष्ट हो जाते हैं।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए इस वर्ष के मेले का थीम 'फसल अवशेष प्रबंधन' इसीलिए रखा गया है ताकि किसानों को इसके प्रति जागरूक किया जा सके। फसल अवशेष प्रबंधन पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों से विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाए जा सकते हैं। कुलपति ने कहा कि किसानों को जागरूक करने के कारण फसल अवशेष प्रबंधन में हरियाणा एक अग्रणीय प्रदेश बन गया है।

वर्तमान समय में हमें फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाकर जीवांश की मात्रा बढ़ाने, फसल विविधिकरण अपनाने के साथ-साथ जल संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों का दोहन जरूरत से ज्यादा ना करने की सलाह दी ताकि आने वाली पीढियो को समस्या ना हो।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	16.09.2024	---	--

एचएयू में 'फसल अवशेष प्रबंधन' पर दो दिवसीय कृषि मेला शुरू

फसल अवशेष प्रबंधन के साथ फसल विविधिकरण तथा जल संरक्षण पर ध्यान देने की जरूरत : प्रो. काम्बोज

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कृषि मेला (रबी) का विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने शुभारंभ किया। इस वर्ष कृषि मेले का थीम 'फसल अवशेष प्रबंधन' रखा गया है। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों एवं निजी क्षेत्र की कंपनियों द्वारा नई तकनीकों की जानकारी देने के लिए 262 स्टालें लगाई गई हैं। मेले में किसानों को रबी फसलों की उन्नत किस्मों का प्रमाणित बीज उपलब्ध करवाने के लिए समुचित प्रबंध किए गए हैं।

मुख्यातिथि को सम्मानित करते अधिकारीगण।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कृषि मेले में संबोधित करते हुए।

मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने कहा कि हरियाणा के गठन के समय खाद्यान्न उत्पादन 25.92 लाख टन था जो वर्ष 2021-22 में बढ़कर 230 लाख टन हो गया है। आज हरियाणा की गेहूं की औसत पैदावार 49.25 क्विंटल प्रति हैक्टेयर एवं सरसों की औसत पैदावार 20.58 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है। हरियाणा बासमती चावल के लिए भी विशेष रूप से विख्यात है तथा देश के 60 प्रतिशत से अधिक बासमती चावल का निर्यात केवल हरियाणा से ही होता है और देश के कुल खाद्यान्न में 17 प्रतिशत का योगदान कर रहा है। फसल उत्पादन में इतनी महत्वपूर्ण उपलब्धियों के साथ-साथ कुछ चुनौतियां भी सामने आई है जैसे मृदा की उर्वरा शक्ति का कम होना, फसल अवशेषों का सदुपयोग ना होना आदि। इन चुनौतियों से निपटने के लिए इस वर्ष के मेले का थीम 'फसल अवशेष प्रबंधन' इसीलिए रखा गया है ताकि किसानों को इसके प्रति जागरूक किया जा सके। फसल अवशेष प्रबंधन पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों से विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाए जा सकते हैं। कुलपति ने कहा कि किसानों को जागरूक करने के कारण फसल अवशेष प्रबंधन में हरियाणा एक अग्रणीय प्रदेश बन गया है। वर्तमान समय में हमें फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाकर जीवांश की मात्रा बढ़ाने, फसल विविधिकरण अपनाने के साथ-साथ जल संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान देने की जरूरत है। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों का दोहन जरूरत से ज्यादा ना करने की सलाह दी ताकि आने वाली पीढ़ियों को समस्या ना हो। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय अब तक 295 उन्नत किस्में विकसित कर चुका है तथा इन किस्मों की अन्य प्रदेशों में मांग बढ़ने का कारण उनकी अधिक पैदावार व गुणवत्ता है जिसमें सरसों की आरएच 725 व आरएच 1975 तथा गेंहू की डब्ल्यूएच 1270 व 1402 तथा चारे वाली फसल जई की ओएस 403 व ओएस 607 जैसी नई किस्में शामिल हैं।

पहले दिन साढ़े 22 हजार किसान पहुंचे

उधर मेले में आज 22 हजार 500 से अधिक किसानों की उपस्थिति दर्ज की गई। उन्होंने नए उन्नत बीजों, कृषि विधियों, सिंचाई यंत्रों, कृषि मशीनरी आदि की जानकारी हासिल की। मेले में आगामी रबी फसलों के बीजों के लिए किसानों में भारी उत्साह देखा गया जहां किसानों ने गेहूं, जौ, सरसों, चना, मेथी, मसूर, बरसीम, जई, तथा मक्का की उन्नत किस्मों के लगभग 1 करोड़ 14 लाख 90 हजार 60 रूपए के बीज खरीदे। मेले में 30 हजार रूपए के कृषि साहित्य की बिक्री हुई। सब्जी व बागवानी फसलों के बीजों की 1 लाख 42 हजार 300 रूपए की बिक्री हुई। किसानों ने मेले में मिट्टी व पानी जांच सेवा का लाभ उठाते हुए मिट्टी के 71 तथा पानी के 170 नमूनों की जांच करवाई। जैविक खेती बारे जानकारी हासिल की।

दैनिक जागरण

सरसों की आरएच 1975 और गेहूं की डब्ल्यूएच 1402 नई किस्म कम पानी में देगी अच्छी पैदावार

सरसों की नई किस्म से वृद्धि कम पैदावार अच्छी, गेहूं दो बार की सिंचाई से होगा तैयार

जागरण संवाददाता • हिसार : चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के वैज्ञानिकों ने 10 साल बाद सरसों की नई किस्म आरएच 1975 और गेहूं की डब्ल्यूएच 1402 नई किस्म उन्नत की है। यह दोनों नई किस्में कम पानी में अधिक पैदावार देने वाली है। सरसों की नई किस्म बढ़वार कम लेगी और पैदावार अच्छी होगी। गेहूं की नई किस्म दो बार सिंचाई पानी में ही पककर तैयार हो जाएगी और पीला रतवा व भूरा रतवा जैसी कोई बीमारियों के आने का भी डर नहीं होगा। इन किस्मों की हरियाणा ही नहीं अन्य प्रदेशों में मांग बढ़ने का कारण उनकी अधिक पैदावार व गुणवत्ता है। जिसमें सरसों की आरएच 725 और गेंहू की डब्ल्यूएच 1270 और चारे वाली फसल जई की ओएस 403 व ओएस 607 जैसी नई किस्में शामिल है। इन किस्मों के बीज की कृषि मेले में भी काफी डिमांड रही।

वैज्ञानिकों के अनुसार जिस एरिया में सिंचाई पानी कम है और ड्राई या सूखा एरिया है। इसे देखते हुए यह किस्में बनाई गई है। इसे बनाने में 12 साल से ज्यादा का समय लग गया। इन किस्मों का बीज भी एचएयू ने कृषि मेले में किसानों को मुहैया करवा दिया है। किसानों की भी इन किस्मों का बीज लेने को लेकर डिमांड रही। यह बीज नेशनल सीड्स कारपोरेशन और बाकी कृषि विश्वविद्यालयों को भी उपलब्ध कराया है। इससे किसानों को फायदा मिलेगा और उनकी आय बढ़ोतरी हो सकेगी। किसानों में भी इन नई किस्मों के बीज लेने को लेकर महामारी रही।

कृषि मेले में गेहूं की अलग-अलग किस्म को देखते किसान । • जागरण

यह है सरसों की खासियत

- आरएच 1975 सरसों किस्म में 40 प्रतिशत तक तेल की मात्रा है और पैदावार अच्छी है।
- इसकी ऊंचाई कम रहती है और इसकी जड़ से ही फुटाव ज्यादा रहता है।
- इसकी फली लंबी होती है और सरसों का दाना मोटे साइज का है। यह 142 से 145 दिन में पककर तैयार होगी।
- यह समय पर बिजाई के लिए चिह्नित की गई है।

यह है गेहूं की खासियत

- डब्ल्यूएच 1402 गेहूं दो सिंचाई पानी में पक कर तैयार हो जाएगी। यह सीमित सिंचाई के लिए है।
- इसमें न पीला-रतवा तो न भूरा रतवा और न कोई अन्य बीमारी आती है।

"डब्ल्यूएच 1402 गेहूं दो बार सिंचाई पानी में पक कर तैयार हो जाएगी। पहला पानी 22 से 24 दिन और दूसरा पानी 85 दिन बाद देना होगा। पकने के समय मध्यम लाल रंग की बालियां हो जाती है। इसमें कुछ ऐसे ही जीव या जीन है, जिससे बीमारी नहीं आती। यह इसकी खासियत है। प्रति एकड़ 50 मण या 20 क्विंटल तक पैदावार होती है।

डा. विक्रम सिंह, वैज्ञानिक, एचएयू।

10 साल के बाद सिंचित अवस्था के लिए और समय पर सिंचाई के लिए यह किस्म उन्नत की गई है। इससे पहले 2013 में ऐसी 749 किस्म आई थी। अभी मार्च माह में नोटिफाइड हुई है। यह ज्यादा बढ़वार नहीं लेती। फली लंबी होती है। इससे 28 से 29 मण या 12 क्विंटल तक पैदावार होगी। -**डा. राम अवतार**, हेड आयल सीड, एचएयू।

मशीनों के उपयोग से खेती में मानव श्रम कम करके लागत घटाने पर भी ध्यान देने की जरूरत है। विश्वविद्यालय अब तक 295 उन्नत किस्में विकसित कर चुका है। सरसों की नई किस्म आरएच 1975 और डब्ल्यूएच 1402 गेहूं की नई किस्म की बाकी प्रदेशों में भी डिमांड है।"

-**प्रो. बीआर काम्बोज**, कुलपति, एचएयू।

हरियाणा की अन्य खबरें पढ़ने के लिए देखें www.jagran.com